

काव्यमयी कठपुतलियाँ

(Poem Recitation using Finger Puppets)

THEME : नहीं करामाती, कविता सुनाती कठपुतलियाँ

Class : III

Number of participants : 1

Duration : 2 minutes 30 seconds



Rules and Regulations:

1. The child will recite the poem enclosed in this invite.
2. The child will have to use at the most four finger puppets.
3. He/she will recite the Hindi poem by using the finger puppets.
4. The performance should be recorded as a 'One Take' video without any pause from start to finish. Editing the filmed video will lead to disqualification.
5. The video of the participant should clearly show the participant as well as the finger puppets.
6. School name should be mentioned in the email subject only and not to be mentioned anywhere in the video or the link.
7. **Video file should be submitted as a shared link (without any restrictions), accessible by anyone.**
8. The link of the video to be mailed to: kavyamayikathputliyan@gmail.com by 26th August 2020, 10 am.
9. Kindly register online for this event at <https://forms.gle/USSYYNuCfdWYUysf7> by 21st August 2020.
10. Any link that fails to open will not be judged.
11. The decision of the judges will be final and binding.

JUDGEMENT CRITERIA :

- Creativity in making the finger puppets.
- Recitation of the poem with proper intonation, clarity and expressions.
- Synchronisation of the movements of fingers with the recitation of the poem.

FOR ANY QUERY CONTACT:

Ms. Neeta Sejwal : 9971084441 (Between 9 am - 12 noon)

मेरे आँगन में मेला

मेरे घर के आँगन में
रहता चिड़ियों का बसेरा,
कोयल, कौआ और तोतों का
हरदम लगता मेला।

कोयल कूक कूक कर गाती
जैसे मुझे समीप बुलाती।
जब मैं उसकी मीठी बोली का स्वाँग रचाता,
उसे अचरज हो जाता।
कहती वो गुस्से में, "तुम ही गा लो,
परंतु अपना सुर तो ज़रा संभालो।
नहीं किसी को भी,
मेरे जैसा गाना आता।"
हँस पड़ते हम सब और
कोयल का तो मूड ही ऑफ़ हो जाता।

काँव-काँव का राग सुनाकर,
कौआ काला कहता,
"राजा बेटा, भूख लगी है,
कुछ ला दो खाने को
चाहे फल हो, या हो मीठा या
फिर एक समोसा।"
मैं दौड़कर माँ से, रोटी पर जैम रख लाता,
खुश हो जाता, ऊँची डाली पर बैठ
वह अपनी पिकनिक मनाता।

तोते बाबू को देख कच्चे-पक्के फल खाते,
मैंने पूछा, "मिट्ठू मियाँ क्यों न
मेरे घर खाने पर आते?"
जवाब मिला, "नहीं बेटा, शुक्रिया!"
"मानव हो तुम! मानव ने
मेरे प्रिय जनों को पिंजरे में है कैद किया।"

मायूस होकर मैंने सोचा,
"यदि हमने इन पर इतना जुल्म
न किया होता!"
"तो हमारे घरों में नित आते-जाते
कोयल, मैना और तोता।"

"ना हो निराश! तुम बालक हो प्यारे",
बोले राजा बेटा से, बगिया के पक्षी सारे।
"तुम संग हम खेलें खाँ,
तुमसे मिलना हमको भाए।"
"इसीलिए,
हर नभचर को, हम यह राज़ बताएँ,"
"एक बालक है ऐसा,
जो है बहुत नेक और
जिस पर है हमें भरोसा।"

"कल मिलकर डालेंगे,
तेरे आँगन में फिर से डेरा।"
उड़ चले, कह कर, वे " बाय - बाय, टाटा ।"

मैं भी खुश हो कर कह बैठा,
"देखो! देखो! वो उड़ा जा रहा,
मेरे आँगन का अलबेला मेला!"

-----x-----